ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14 Vol.-5, No.-I, PP-132-134, YEAR JUNE 2016

भारत में शैक्षिक नीतियों एवं सरकारी योजनाओं द्वारा: महिला सशक्तीकरण

❑ डॉ0 निशा बहल

सारांशः महिला सशक्तीकरण एक ऐसा तथ्य है, जिसकी अवहेलना किसी भी समाज, देश के विकास की गति को धीमा कर सकती है। भारत की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में काफी पिछड़ी हुई है। यदि हम जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का सूक्ष्म अवलोकन करें तो महिला सशक्तीकरण के चार स्तंभों 'स्वास्थ्य' सुरक्षा 'शिक्षा' और आर्थिक स्वावलंबन के लिहाज से बजट में घोषणाएँ की गई है। ''स्वास्थ्य सुरक्षा योजना'' अप्रत्यक्षः महिला स्वास्थ्य सुधार में भूमिका निभाएगी। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के लिए 100 करोड़ रूपये दिये गये हैं। स्वयं का छोटा मोटा व्यवसाय करने वाली महिलाओं के लिए मुद्रा योजना मददगार सिद्ध होगी। वित्त वर्ष 2016–17 में मुद्रा योजना के लए 1,80,000 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया है। इन सब प्रयासों से एक सशक्त महिला स्थाई सामाजिक विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण सूत्र है।

महिला सशक्तीकरण 'शिक्षा' के साथ अपरिहार्य रूप से जुड़ा हुआ है। शिक्षा का तात्पर्य अक्षर ज्ञान मात्र नहीं है वरन् शिक्षा निर्णय लेने की क्षमता आर्थिक स्वावलंबन और अधिकारों के प्रति जागरूकता का मार्ग प्रशस्त करती है। स्वास्थ्य मंत्रालय के नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के तहत वर्ष 2015–16 के चयनित राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों में महिला सशक्तीकरण के बेहतर संकेत देखने को मिलते हैं।(1) केन्द्र सरकार ने महिला शिक्षा को लेकर हाल में अनेक योजनाएं शुरू की है। इसमें प्रमुख रूप से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना। जिसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहारा गया। 100 करोड़ रूपये के शुरूआती कोष के साथ यह योजना शुरू में देशभर के 100 जिलों से शुरू की गई। (2)

भारत सरकार की ओर से अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े वर्ग की बालिकाओं के लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए कस्तूरबा गांधी विद्यालय योजना का शुभारंभ किया गया। बजट 2016–17 में वित्तमंत्री ने महिलाओं के सशक्तीकरण के आधार स्तंभ, आर्थिक स्वावलंबन के लिए घोषणा की है। सर्वेक्षण के अनुसार 5 से 14 वर्ष की बालिकाओं की साक्षरता दर बढ़ी है।(3) हमारे देश ने अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कराने में काफी तरक्की की है। यह अध्ययन यूनेस्को और एजूकेशन फॉर ऑल ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट द्वारा किया गया है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत पहले ही प्राथमिक स्कूल प्रवेश में लैंगिक समानता हासिल कर चुका है। बजट 2016–17 में वित्तमंत्री ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जोकि बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विभाग की संयुक्त पहल है।(4)

'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' द्विआयामी योजना है। जिसका उद्देश्य लिंगानुपात में सुधार करना है और बेटियों को पढ़ाना है। महिला शिक्षा वर्तमान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में एक है, और इस हेतु राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम, राष्ट्रीय साधन सह–मेरिट छात्रवृत्ति योजना संचालित है। इन योजनाओं में सर्वशिक्षा अभियान व राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के द्वारा लगभग पूरी महिला शिक्षा को निःशुल्क किया गया हैं आज भारत के सभी राज्यों में सरकारी विद्यालयों में बालिकाओं का कोई शुल्क नहीं लगता या नाममात्र होता है। महिलाओं को केवल प्रमाणपत्र और डिग्री के लिए शिक्षा देने के स्थान पर

❑ असि0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर, (उ0प्र0) भारत

ऐसे विशेष पाठ्यक्रमों की रचना माध्यमिक–स्तर से ही की जानी आवश्यक है जिससे बालिका न केवल अपने पैरों पर खड़ी हो अपितु परिवार का आधार भी बने। महिला औद्योगिक संस्थानों के साथ ही महिला उद्यमी प्रेरणा केन्द्र भी स्थापित करने होंगे। सहकारिता और अन्य वित्तीय संस्थाओं में महिलाओं के लिए विशेष स्वरोजगार योजनायें भी है लेकिन उन्हें अधिक व्यापक व सर्वसमावेशी बनाने में सामाजिक संस्थाओं की महती भूमिका है।

बजट 2016–17 में वित्तमंत्री ने महिलाओं के सशक्तीकरण के आधार स्तंभ, आर्थिक स्वावलंबन के लिए घोषणा की है जिसमें 'स्टेण्ड अप योजना' प्रत्यक्ष रूप से है। इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति व जनजाति तथा महिला उद्यमियों के लिए बजट में 500 करोड़ रूपये दिए गए हैं।(5)

अर्थव्यवस्था में जोड़ते हुए भारत ने विभिन्न नीतियाँ, योजना और प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाए गए हैं। सरकार ने नवम्बर 2013 में महिलाओं के लिए भरतीय महिला बैंक लिमिटेड नामक बैंक स्थापित किया है जो महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए खोला गया है।(6) देश में महिलाओं की श्रमशति में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना , स्वरोजगार 8 अप्रैल 2015 का विकास हुआ। इसमें 50 हजार रूपये से लेकर 10 लाख रूपये का ऋण दिया जायेगा। अभी तक 2 लाख महिला उद्यमी इसका लाभ ले चुकी है। मनरेगा महिला सशक्तीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रह है। वर्ष 2016–17 ने मनरेगा में अब तक 57 प्रतिशत कामगार महिलाएँ होने की बात सामने आयी है।(7)

महिला नीति विकास के लिए प्रधानमंत्री ने कहा है, ''एक राष्ट्र हमेशा ही अपने देश की महिलाओंको सशक्त बनाना है। उनका विचार है कि मल्टी–टास्किंग क्षमता जिसे आज के समय प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है और हमारे यहाँ महिलायें तय समय सीमा में एक साथ विभिन्न कार्यों को संचालित करने में दक्ष होती है।(8) वर्तमान में विश्व स्तर पर यह माँग उठ रही है कि महिलाओं द्वारा की जाने वाली बच्चों और वृद्धों की देखभाल और घर के काम न सिर्फ मान्यता दी जाए बल्कि उसका मौद्रिक प्रतिदान भी दिया गया।(9) होममेकर या चाइल्डकेयर प्रोवाइडर की बजाय अगर उन्हें श्रमिक माना जायेगा तो भी वे अपने घरों और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।(10)

2015–16 के आम बजट में स्वच्छ भारत अभियान के लिए विशेष प्रावधान भी किया गया है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में विद्यालय परिसर में स्वच्छभारत अभियान के माध्यम से स्वच्छता संबंधी सुविधाओं में सुधार के लिए स्वच्छ भारत कोष की स्थापना की थी। विद्यालयों में बालिकाओं के लिए शौचालय–निर्माण, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, बाल स्वच्छता अभियान, सुकन्या समृद्धि योजना और मिशन इन्द्रधनुष जैसे अनेक कार्यक्रम महिलाओं के स्वावलम्बन और सशक्तीकरण की दिशा में एक प्रयास है। ग्रामीण व शहीर क्षेत्रों में महिला स्वासयि सुविधाओं के लिए पहल भी की गई है।(11)

महिला स्वास्थ्य के लिए 'उज्जवला'' योजना को निःशुल्क एल.पी.जी. कनेक्शन प्रदान करने व बी0पी0एल0 परिवार की महिलाओं को निःशुल्क दिये जायें। योजना का कार्यान्वयन वित्तीय वर्ष 2016–17, 2017–18 और 2018–19 में किया जायेगा। इससे उनके स्वस्थ्य रक्षा होगी। इस दिशा में वित्त मंत्री ने 29–02–2016 को बजट भाषण में गरीबी रेखा से नीचे परिवारों को 1.5 करोड़ महिलाओं को मुफ्त एल0पी0जी0 कनेक्शन प्रदान करने के लिए 200 हजार करोड़ रूपये के बजट का प्रावधान किया था। इसके साथ ही बजट में 5 करोड़ परिवारों तक योजना का लाभ पहुँचाने के लिए योजना को 2 वर्ष तक लागू रखने की घोषणा की है।(12)

अतः समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तन हेतु ऐतिहासिक सत्य को समाज में रखना आवश्यक है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ स्त्रियों ने उस क्षेत्र में सर्वोच्चता को प्राप्त न किया हो। महिलाएँ न केवल देश की आधी आबादी है, बल्कि उन्होंने बीते दशकों में अद्वितीय योगदान दिया है। किसी भी देश की संस्कृति उसका इतिहास और भाव–भाषा वहाँ की महिलाओं के विकास, प्रगति और

समृद्धि में परिलक्षित होता है। इसका मुख्य कारण शिक्षा व साक्षरता के द्वारा स्त्री की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया गया है। इससे महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती है, बल्कि भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होतीहै। ग्रामीण बालिकाओं के स्कूलों में नामांकन बढ़वाने तथा ठहराव निश्चित करने के लिये बुनियादी ढाँचे को सुधारने के लिए कक्षाओं, शौचालयों, पेयजल व्यवस्था का भी प्रबंध किया जा रहा है। महिला सशक्तीकरण के चार मुख्य बिंदुओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और आर्थिक स्वावलंबन को ध्यान में रखते हुए वित्तमंत्री ने बजट 2016 में महत्वपूर्ण घोषणाएँ की है। हर्ष का विषय है कि अब स्त्री जगत का बहुत बड़ा भाग अपनी संवादहीनता, संकोचशीलता से मुक्त होकर मजबूत समाज के नेतृत्व में अपनी भागीदारी के लिए प्रस्तुत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन की अधिकाधित वेबसाइट्ू./who.int/eu/.
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की अधिकाधिक वेबसाइट www/mpwed.in.
3. भारत सरकार की जनगणना–2011 प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. सबके लिये शिक्षा आकलन (वर्ष 2000) मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली।
5. भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की अधिकाधिक वेबसाइट– finmin.nic.in/hindi/index.95p
6. शर्मा राकेश, भारत में महिला साक्षरता एक परिदृश्य (लेख), प्रतियोगिता दर्पण, आगरा।
7. पालीवाल सुभाषिनी, भारत में महिला शिक्षा और साक्षरता, कल्याणी शिक्षा परिषद, दिल्ली
8. Mittal Mukta (1995) 'Women Power in India'. Annual Publisation, New Delhi
9. आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2015–16

*****